IJAER/Sep-Oct -2022/Volume-11/Issue-5 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

धर्मवीर भारती के उपन्यासों का कहानीकार एवं नबंधकार का विवेचनात्मक अध्ययन

Jyoti Dubey

Research Scholar Kalinga University

Dr. Vinod Kumar Yadav,

Department of Hindi,Kalinga University

सार

भारती जी उपन्यासकार, कहानीकार, नाटककार, कवि और धर्मयुग के संपादक के रूप में जाने जाते हैं। इस बहुमुखी प्रतिभा के धनी भारती जी एक प्रख्यात निबंधकार के रूप में भी जाने जाते हैं। अज्ञेय धर्मवीर भारती की प्रशंसा करते हुए लिखते हैं – श्प्रतिभाएँ तो औरों से भी अधिक हैं, विलक्षण भी हैं, परन्तु धर्मवीर भारती में एक विशेषता है।श वह एक अच्छे, मेहनती, दिलचस्प लेखक तो हैं ही, नई पौध के सबसे मौलिक लेखक भी हैं कथाकार धर्मवीर भारती हिन्दी भाषा की एक प्रसिद्ध हस्ती हैं। उनकी लघु कहानियों के कुल चार संग्रह जारी हो चुके हैं। श्शर्मदों का गाँवश इन संग्रहों में से पहला था, और यह 1946 में प्रकाशित हुआ था। श्स्वर्ग और पृथ्वीश दूसरा संग्रह था, और यह 1949 में जारी किया गया था। श्मून एंड द ब्रोकन पीपलश तीसरा संग्रह था, और यह 1955 में प्रकाशित हुआ। श्बंद गली का आखिरी मकानश चौथा और अंतिम कहानी संग्रह था। 1969 से एक प्रकाशन। अपने पहले के कार्यों में उन्होंने जो रोमांटिक और आदर्शवादी रवैया प्रदर्शित किया, भारती के निबंधकार के रूप को स्पष्ट करने से पहले एक बात बता देनी चाहिए कि उनके निबंधों को निबंध की शिल्पगत व्याख्या के अनुकूल माना जाए अथवा नहीं, इस बारे में यदा–कदा प्रश्न उठते रहे हैं ।

खोजशब्दरू निबंधकार एकथाकार एआत्मकथात्मक एसंस्कृति

परिचय

भारती के व्यक्तित्त्व एवं जीवन से संबंधित, विभिन्न बातों, घटनाओं का जिक्र उनके अनेक मित्रों–आलोचकों के द्वारा उनके बारे में लिखे संस्मरणों, लेखों, पत्रों में उपलब्ध है, परन्तु भारती के जीवन एवं परिवार से संबंधित जानकारी स्वयं उनके द्वारा लिखित एक पत्र के रूप में उपलब्ध है, जिसे भारती ने किसी शोधकर्त्ता के अनुरोध पर लिखा था । अतः उनके जीवन से संबंधित पड़ावों को हम उनके ही शब्दों से साक्षात् कर सकते हैं। इस पत्र के संबंध में पुष्पा भारती लिखती हैं कि यह पत्र कब और किसके लिए लिखा था, कोशिशों के बावजूद इसकी जानकारी नहीं मिल सकी है। किन्तु भारती जी के पत्र से यह स्पष्ट है कि उन्होंने किसी शोधकर्त्ता के

आग्रह पर ही लिखा है चूँकि आपकी थीसिस के लिए आवश्यक है अतः संक्षेप में अपने जीवन और उस पर पड़े प्रभावों की रूपरेखा लिख रहा हूँ।

भारती जी ने अपने अधिकांश कार्यों में उत्तर–पूर्व भारत के नगरों की संस्कृति एवं जीवनशैली का यथार्थवादी चित्रण किया है। उनके कार्यों में आसपास क परिवेश के साथ–साथ मध्यम वर्ग और निम्न मध्यम वर्ग की मजबूरियों, साथ ही उनकी घुटन, अधूरी जरूरतों और अकेलेपन की भावनाओं का भी प्रतिनिधित्व किया गया है। शुरू से ही उनके कार्यों का सबसे उल्लेखनीय पहलू पात्रों की जीवंत प्रकृति रही है। ये पात्र अपने परिवेश में इस तरह रचे–बसे हैं कि जिस संदर्भ में वे स्थित हैं, उससे अलग उनका कोई अस्तित्व नहीं है। उनकी रचनाओं में बड़ो संख्या में पात्र अतरसुइया भौगोलिक क्षेत्र के मूल निवासी हैं। उन्हें अपने समुदाय और क्षेत्र से अत्यधिक स्नेह था। इस विषय पर नासिरा शर्मा जी ने लिखित रूप से चर्चा की है, जिनका मानना है कि भारती की किताबों के सभी पात्र उनके पड़ोस और गली से उपजे हैं। यह एक हकीकत है जिसे वह खुद स्वीकार करते हैं।श जब भारती तस्वीरें ले रहे थे तो उन्होंने रियलिटी का सहारा लिया. इसकी वर्तमान स्थिति में, चित्र तैयार किया गया था। हालाँकि, वह कौन था जिसने उन पात्रों को अमर बना दिया? निःसंदेह, यह उस स्नेह के कारण था जो भारती अपने आस–पास की प्राकृतिक दुनिया के प्रति महसूस करते थे।

डॉ. धर्मवीर भारती का प्रारंभिक जीवन

डॉ. धर्मवीर भारती का जन्म 25 दिसम्बर 1926 को इलाहाबाद में हुआ था। उनके माता–पिता श्री हैं। चिरंजी लाल और श्रीमती. चंदा देवी. उनके पिता की मृत्यु और उनके परिवार के साथ गहरे वित्तीय संकट का सामना करने के कारण सुरक्षा के नुकसान के कारण उनका बचपन दर्दनाक रहा था। हालाँकि, भारती 1946 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी भाषा में एमए करने में सफल रहे। हिंदी में सर्वोच्च अंक प्राप्त करने के लिए उन्हें षचिंतामणि घोष पुरस्कारष से सम्मानित किया गया। कॉलेज के दिनों से ही उनका रुझान लेखन की ओर था। उन्होंने कई उपन्यास, कविताएँ, नाटक, निबंध और आलोचनाएँ लिखीं।

प्रेम और रूमानियत भरे कवि, कैशोर्य मन के सर्जक– धर्मवीर भारती

उत्तर प्रदेश का इलाहाबाद शहर जो अब प्रयागराज के नाम से जाना जाता है, एक समय तक अपनी साहित्यिक प्रतिभा के लिए मशहूर रहा। निराला, महादेवी वर्मा, हरिवंशराय बच्चन से लेकर पंत जैसे बड़े रचनाकारों की कर्मस्थली रहे इलाहाबाद के साहित्यिक वातावरण ने हिंदी साहित्य को अनेक रचनाकार दिए। इलाहाबाद में ही जन्मे, उन्हीं साहित्यिक फिजाओं में साँस लेकर साहित्य को अपने अंतःस्थल तक ले जाने वाले धर्मवीर भारती हिंदी साहित्य के एक प्रतिष्ठित रचनाकार हैं। 'गुनाहों का देवता' इनकी क्लासिक रचना है। इस रचना के बारे में यह अतिशयोक्ति बहुत प्रसिद्ध है कि इसे पढ़े बिना इलाहाबाद के बच्चे जवान नहीं होते। सुधा व चंदर की प्रेम कहानी को उन्होंने जिस तरह पिरोया है, वह अप्रतिम बन पड़ा है। धर्मवीर भारती का साहित्यिक अवदान बड़ा है। प्रेम और रूमानी कविताओं के सर्जक, क्लासिक उपन्यास के रचयिता, नाटकों

में सिद्धहस्त, एक श्रेष्ठ विचारक जो समग्रता में समन्वय के भाव का आग्रही है, एक निबंधकार व सुयोग्य सम्पादक के रूप में वे हिंदी साहित्य में याद किए जाते रहे हैं।

विविध विधाओं में लिखने वाले रचनाकार को किसी एक विधा का रचनाकार बना देना उसे सीमित कर देना होता है। जिस प्रकार जयशंकर प्रसाद के साहित्यिक रूप में यह निर्धारित कर पाना मुश्किल होता है कि वे बेहतर कथाकार हैं, नाटककार हैं या कवि उसी धर्मवीर भारती के कवि, नाटककार, कथाकार या सम्पादक में से किस रूप को श्रेष्ठ मानें या किसे कमतर मानें, निर्धारित कर पाना मुश्किल होगा।

उद्देश्य

1. उपन्यास की सारी कथा किसी इति वृत्त की भांति ही वर्णनात्मक नहीं होती।
2. उपन्यास के पात्र वस्तुतः भारती जी की कहानियों का उद्देश्य भावात्मक संबंधों की अभिव्यक्ति है।

कहानी – संग्रह का सामान्य परिचय

- मुरदों का गाँव

उस गांव के बारे में अजीब अफवाहें फैली थीं. लोग कहते थे कि वहां दिन में भी मौत का एक काला साया रोशनी पर पड़ा रहता है. शाम होते ही कब्रें जम्हाइयां लेने लगती हैं और भूखे कंकाल अंधेरे का लबादा ओढ़कर सड़कों, पगडंडियों और खेतों की मेंड़ों पर खाने की तलाश में घूमा करते हैं. उनके ढीले पंजरों की खड़खड़ाहट सुनकर लाशों के चारों ओर चिल्लानेवाले घिनौने सियार सहमकर चुप हो जाते हैं और गोश्तखोर गिद्धों के बच्चे डैनों में सिर ढांपकर सूखे ठूंठों की कोटरों में छिप जाते हैं.

इसी वजह से जब अखिल ने कहा कि चलो, उस गांव के आंकड़े भी तैयार कर लें, तो मैं एक बार कांप गया. बहुत मुश्किल से पास के गांव का एक लड़का साथ जाने को तैयार हुआ. सामने दो मील की दूरी पर पेड़ों के झुरमुटों में उस गांव की झलक दिखाई दी. मील भर पहले ही से खेतों में लाशें मिलने लगीं. गांव के नजदीक पहुंचते–पहुंचते तो यह हाल हो गया कि मालूम पड़ता था, भूख ने इन गांव के चारों ओर मौत के बीज बोए थे और आज सड़ी लाशों की फसल लहलहा रही है. कुत्ते, गिद्ध, सियार और कौए उस फसल का पूरा फायदा उठा रहे थे.

इतने में हवा का एक तेज झोंका आया और बदबू से हम लोगों का सिर घूम गया. मगर फिर जैसे उस दुर्गंध से लदकर हवा के भारी और अधमरे झोंके सूखे बांसों के झुरमुटों में अटककर रुक गए. सामने मुरदों के गांव का पहला झोंपड़ा दीख पड़ा. तीन ओर की दीवारें गिर गई थीं

और एक ओर की दीवार के सहारे आधा छप्पर लटक रहा था. दीवार की आड़ में एक कंकाल पड़ा था. साथ वाला लड़का रुका,"यह! यह निताई धीवर है."

"कहां?" अखिल ने पूछा.

"वह, वह निताई धीवर सो रहा है!" लड़के ने कंकाल की ओर संकेत किया,"वह धीवर था और गांव का सबसे पट्ठा जवान. अकाल पड़ा. भूख से उसकी मां मर गई. उसके पास खाने को न था, फिर लकड़ी लाकर चिता सजाना तो असंभव था. उसने अपनी नाव बाहर खींची, मां के शरीर को नाव में रखा, ऊपर से सूखी घास रखी और आग लगा दी. रहा–सहा सहारा भी चला गया और एक दिन वह भी यहीं भूखा सो गया. यहीं, इसी जगह उसकी मां ने भी दम तोड़ा था." वह लड़का बोला.

हवा का झोंका फिर चला और खोखले बांसों से गुजरती हुई हवा सन्नाटे में फिसल पड़ी. लड़का चीख पड़ा,"वह सांस ले रही है, सुना नहीं आपने?"

"कौन?"

"वह, वह जुलाहिन सांस ले रही है."

"क्या वाहियात बकता है!" अखिल ने झुंझलाकर डांटा,"कौन जुलाहिन?"

"आपको नहीं मालूम? वह सामने झोंपड़ी है न, उसी में जुलाहे रहते थे. उसमें से तीन भूख से मर गए. रह गए सिर्फ जुलाहा, जुलाहिन और उनका करघाय मगर भूख से उनकी नसें इतनी सुस्त थीं कि करघा भी बेकार था. उन्होंने पास के जंगल से जड़ें खोदकर खानी शुरू कीं. उनके दांत नुकीले हो गए, जैसे सियारों की खीसें. जुलाहा बीमार पड़ गया. जुलाहिन जड़ें खोदने जाती थी. एक दिन जड़ें खोदते वक़्त खुरपी उसके कमजोर हाथों से फिसल गई और बाएं हाथ की तर्जनी और अंगूठा कटकर गिर गया. जब वह घर पहुंची तो भूखा व बीमार जुलाहा झल्ला उठा और चिल्लाकर बोला,'निकल जा मेरे घर से. अब तू बेकार है. न करघा चला सकती है, न जड़ें खोद सकती है.' तब से जुलाहिन का पता नहीं है. मगर कुछ लोगों का कहना है कि वह भूत बनकर गांव की कब्रों के पास घूमा करती है. वह अभी भी सांस ले रही थी, सुना नहीं आपने?"

तारा और किरण

तारा और किरण की कहानी के दौरान प्रेम का सार दिखाया गया है। प्रेम के विपरीत जो प्रेम पर निर्भर है, जो शाश्वत है, प्रेम जो युवावस्था पर निर्भर है वह नश्वर है। कथा ने इस विशेष वास्तविकता की ओर ध्यान आकर्षित किया है। वरुण लोक शहर में, एक अतिथि आता है। प्यार एक ऐसी चीज है जिसकी वरुण लोक की रानी आदी नहीं है। प्रेम की प्रकृति कुछ ऐसी है जिसे वह व्यक्त करने में असमर्थ है। उनकी बातचीत के दौरान, आगंतुक रानी से कहता है, ष्तुम समझ

भी नहीं सकती, रानी!ष हम इंसानों को इस बात की जरूरत महसूस कराने के लिए कि यह प्यार हमारे अंदर पैदा होता है, हमें एक ऐसे दिल की जरूरत है जा जीवित हो और धड़कता हो। रानी, इस तथ्य के बावजूद कि यह एक अलौकिक प्रेम है, यह हममें से उन लोगों के दिलों से अनुपस्थित नहीं है जो नश्वर हैं। आपकी माया की दुनिया इस घटना से परिचित नहीं है। बहुत समय से प्रेम की प्रतीक्षा कर रही स्त्री, रानी, अब चिर यौवन से प्रम पाना चाहती है। दूसरी ओर, रानी मेहमान के दयालु स्पर्श की गर्मी को सहन करने में असमर्थ होती है और उसके जमे हुए अंग तरल होने लगते हैं। ष्इस तथ्य के बावजूद कि हम नश्वर हैं, हम आँखें बंद करके प्यार करत हैं क्यांकि हमारा प्यार एक आत्म–बलिदान है, अनुरोध नहीं, रानी, आपने हमारे प्यार को जवानी के तराजू पर तौलने की कोशिश की, इस तथ्य के बावजूद कि हम इस बारे में जानते हैं तथ्य यह है कि हम नश्वर हैं।ष प्यार की प्रचंड गर्मी आपको पिघला रही है और आप पिघल रहे हैं। मैं तुम्हारी वासनाओं और तुम्हारे नश्वर यौवन का मिश्रण हूँ। प्यार की चिलचिलाती गर्मी के परिणामस्वरूप, आगंतुक एक सितारे में बदल जाता है, और रानी एक किरण में बदल जाती है। दोनों पक्ष इस तरह प्यार की खातिर अपना बलिदान देते हैं।

कला एक मृत्यु चिह्न

फिल्म आर्ट ए डेथ मार्क में नायक एक कलाकार है जो अपने काम में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए आत्म–बलिदान करता है। इस दृश्य में, बदली हुई राजकुमारी कलाकार को एक चुनौती जारी करती है, और मांग करती है कि वह एक ऐसा स्मारक बनाए जो ग्रह पर हर खूबसूरत महिला के गौरव को पूरी तरह से नष्ट कर दे। दूसरी ओर, मानदंड यह था कि प्रतिमा जीवंत और भावनात्मक होनी चाहिए। वह पत्थर की बनी हुई मृत मूर्ति नहीं होनी चाहिएय बल्कि, उसे स्पंदनों के साथ जीवंत होना चाहिए। राजकुमारी द्वारा प्रस्तुत चुनौती को कलाकार द्वारा स्वीकार कर लिया जाता है, जो फिर मूर्ति का गढ़ने की प्रक्रिया में पूरी तरह से लीन हा जाता है। उन्होंने मूर्ति बनाई, लेकिन उसका यथार्थवादी रूप धारण करना असंभव था। उस मूर्ति को जीवन का एहसास दिलाने के लिए कलाकार ने अपनी जान दे दी। यह कथा महिलाओं के आकर्षण की तुलना में कला के महत्व पर अधिक जोर देती है। इसके अतिरिक्त, जीवन देने वाली कलम के प्रति कलाकार की प्रतिबद्धता और समर्पण पर प्रकाश डाला गया है। यह इस तथ्य के कारण है कि वास्तविक कला कलाकार की अपनी कला के प्रति जुनून पर निर्भर होती है।

कवि और जिंदगी

इस कथा में कवि की कविता के प्रति प्रतिबद्धता, कवि की स्वतंत्रता, कवि का कर्तव्य आदि मुद्दे उठाए गए हैं। शाही संरक्षण को ठुकराने के बाद, कवि काव्यात्मक स्वतंत्रता के लिए अपने देश से भाग गया। लंबी अनुपस्थिति के बाद अपने वतन लौटने पर उन्होंने वहां बदलाव देखा। उनके देश की नई आजादी के बावजूद, गुलामी कायम रही और यहाँ तक कि वहाँ फलो–फूली भी। वह ऐसी सेटिंग में अपनी संगीत क्षमताओं को निखारने में असमर्थ होगा। वह तबाह हो गया

था. उनका हृदय पहले से ही शाही सत्ता द्वारा अपनी उपेक्षा पर विद्रोह कर रहा था, और अब जनता की उदासीनता से और भी अधिक पीड़ा हो रही थी। आशा से रहित होकर कवि अपनी कैब में वापस चला गया। उन्होंने कविताएँ लिखना बंद कर दिया।

अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के प्रति भारती जी की दृष्टि रू

एक आत्म–जागरूक पत्रकार और साहित्यकार के रूप में, भारती जी ने घरेलू और वैश्विक मुद्दों की एक विस्तृत श्रृंखला पर लेखन कार्य किया है। लेखन में उन्होंने राजनीति, समाज और साहित्य से संबंधित महत्वपूर्ण वैश्विक घटनाओं पर अपनी राय रखी है। यहां, उन्होंने मुद्दों को सूचीबद्ध करने के अलावा और भी बहुत कुछ किया हैय उन्होंने वास्तव में उनके कारणों की जांच की है। यह इस तथ्य के अतिरिक्त है कि इन मुद्दां को खत्म करने के लिए वैश्विक कार्रवाई के लिए विशिष्ट सिफारिशें की गई हैं। इचमैन की निंदा की गई, लेकिन उन्होंने बताया कि मुकदमे के बारे में सुनकर उन्हें कैसा महसूस हुआ। यह लेख इसी बारे में है।

हालाँकि भारती जी ने सोचा कि उन्हें उनके क्रूर कृत्य के लिए दंडित किया जाना चाहिए, लेकिन जिस व्यवस्था ने उन्हें हजारों निहत्थे यहूदियों को मारने का आदेश दिया था, उन्होंने उन्हें असली अपराधी के रूप में देखा। इसलिए वे आश्चर्य करते हैं, ष्यदि हजारों निर्दोष लोगों की हत्या करना एक भयानक अपराध है, तो क्या उन एक या दो लोगों को दंडित करने से जिन्होंने इसे अंजाम देने में मदद की, इस तरह के अपराध दोबारा होना असंभव नहीं हो जाएगा

भारती जी ने इस घटना का एक अतिरिक्त पहलू भी हमारे सामने लाया है। यहूदी रक्त शुद्धता के आदर्श के अनुसार लाखों यहूदियों को दी गई अमानवीय पीड़ा के लिए इचमैन का पीछा कर रहे थे। अजीब बात है कि नस्लीय शुद्धता के प्रति यहूदियों का जुनून भी यही कारण था कि उन्होंने भारत से यहूदियों को परमिट देने से इनकार कर दिया। इस परिदृश्य पर अपना आक्रोश व्यक्त करने के लिए भारती जी ने लिखा है––नैतिकता के विरुद्ध यह कैसी वीभत्स पैरोडी है। व्यवस्था, जो इचमैन को सबसे भयानक अपराधी क रूप में देखती है, ने अनजाने में इचमैन को अपन आध्यात्मिक नेता के रूप में ले लिया है क्योंकि इसने ऐतिहासिक चेतावनियों को नजरअंदाज कर दिया है।

भारती जी के निबंधों में मानवीय मूल्य

भारती जी की मानवीय मूल्यां में आस्था सदैव बनी रही। उनका विचार था कि साहित्य में हमारे समकालीन समाज में खोए हुए मानवीय मूल्यों को पुनर्स्थापित करने की शक्ति है। इतिहास के इस चौराहे पर, उन्हें यकीन था कि केवल साहित्य ही लोगों को आपदा के कगार से वापस ला सकता है। इस कारण भारती जी ने साहित्यकारों को सचेत किया है कि वे अपने कर्तव्यों से विमुख न हों।

आधुनिकता, या संकट पर भारती जी का हमारा लेख इस बात की पड़ताल करता है कि हमारे समय में मानवीय मूल्य कैसे चरमरा रह हैं। उनका कहना है कि यह मानव इतिहास का सबसे समस्याग्रस्त काल है आर इसमें समसामयिक काल भी शामिल है। ष्इतिहास दिखाता है कि मध्य युग का यह आग्रह कि मूल्यों का स्रोत मनुष्य नहीं बल्कि मनुष्य से परे कोई पारलौकिक दैवीय शक्ति है, टूट गया है,ष वह लिखते हैं, यह समझाते हुए कि ऐसा क्यों है। विज्ञान के मूल दावे के परिणामस्वरूप विघटन और संकट उत्पन्न हुआ कि ब्रह्मांड एक बड़े चक्र की तरह है, कि मनुष्य और उसके आंतरिक और बाहरी कार्य जानवरों या मशीनों के बराबर हैं, और इसमें मूल्यों की खोज केवल एक गलतफहमी है। आर्थिक अंतर और लोगों के सोचने के तरीके के कारण, मनुष्य बिखर गया, आर परिणामस्वरूप, वह एक नासमझ, भावनाहीन मशीन से ज्यादा कुछ नहीं रह गया। इस संदर्भ को देखते हुए, भारती जी सोचते हैं कि साहित्य, राजनीति या दर्शन नहीं, मानवीय मूल्यों और उदात्तता में उतरने का सबसे अच्छा तरीका है। जिस भावनात्मक स्तर पर साहित्य का लक्ष्य मानव जाति को पकड़ना है, वह एक ऐसा विषय है जिस पर उन्होंने लिखा है। मनुष्य की आंतरिकता को बहाल करना – उसका वह हिस्सा जो मूल्यों की तलाश करता है और उसके दृढ़ संकल्प को जगाता है – जहां यह वास्तव मं चमकता है।

क्योंकि आधुनिकता का यह मद्दा सिर्फ एक देश में नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में हो रहा है, भारती जी को यकीन है कि यह विचार कि पूर्व का इस विडंबना से कोई लेना–देना नहीं है, बिल्कुल गलत है। लेखक का तर्क है कि इसके विपरीत दिखने के बावजूद, मौजूदा संकट पर पश्चिमी और पूर्वी दृष्टिकोण वास्तव में परस्पर जुड़े हुए हैं और यहां तक कि पूरक भी हैं। जैसे–जैसे ऐतिहासिक संकट गति पकड़ रहा है, पूर्व और पश्चिम को गहरे स्तर पर यह एहसास हो रहा है कि उनकी नियति पहले की तुलना में किस तरह आपस में जुड़ी हुई है।

भारती जी के निबंधों में इतिहास दृष्टि

प्रगतिवाद की आलोचना में भारती जी लिखते हैं, कोई भी राष्ट्र, कोई भी जाति, कोई भी सभ्यता या कोई भी साहित्य यदि अपने आप को अपने अतीत से अलग कर लेता है तो वह कमजोर हो जाता है। उनके कथन से पता चलता है कि वे हमेशा अतीत के प्रति सचेत रहते थे। अतीत पर उनका दृष्टिकोण व्यापक शाध पर आधारित है। उनका विचार था कि एक लेखक की इतिहास से परिचितता सीधे तौर पर ऐतिहासिक विषयों के बारे में पढ़ने में बिताए गए समय पर निर्भर करती है। वे न केवल भारतीय इतिहास जानते थे, बल्कि विश्वभर का इतिहास भी जानते थे। यह इस तथ्य स प्रदर्शित होता है कि उनका साहित्य ऐतिहासिक घटनाओं का सटीक चित्रण करता है। भारती जी एशियाई इतिहास और पश्चिमी सूत्र लेख में पश्चिमी इतिहासकारों द्वारा एशियाई इतिहास के विरोधाभासी और विषम चित्रण के विरुद्ध तर्क देते हैं। इस बीच, उन्होंने उन व्यक्तियों का भी उपहास किया है जो अपने अतीत और संस्कृति से परिचित न होने के बावजूद आंख मूंदकर पश्चिम–लिखित, असंगत और टेढ़े–मेढ़े इतिहास को तथ्य के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। ष्मानसिक और सांस्कृतिक गुलामी में अपने गौरव पर विचार करेंष इस विषय पर भारती जी के लेख का शोर्षक है, जो उन्होंने पश्चिम से राजनीतिक स्वतंत्रता के लिए

लड़ते समय लिखा था। परिणामस्वरूप, हम उस बात पर विश्वास करने लगे जो कोई पश्चिमी लेखक या विचारक एशिया या भारत के बारे में कहता था। नेहरू जी के ष्भारत एक खोजष् के खि़लाफ हमले में, भारती जी न कहा कि जब वे भारत या एशिया की यात्रा करते थे, तो हमारे प्रमुख बुद्धिजीवी और राजनेता भी पश्चिम में बनी दूरबीनों का उपयोग करते थे।

निष्कर्ष

भारती जी के सभो लेखन सामुदायिक सेवा के किसी न किसी पहलू से संबंधित हैं। एक सूझबूझ वाले पत्रकार और साहित्यकार के रूप में वे अपन परिवेश के प्रति जागरूक थे। वे अपने व्यापक दृष्टिकोण के कारण मुद्दों की तह तक जाने, उनकी गहन जांच करने और उपयुक्त उत्तर देने में सक्षम हैं। भारती जी ने अपनी रचनाओं में साम्प्रदायिकता, जातिवाद, सामाजिक भय, मानवीय अभाव, आत्मीयता और शांति जैसे मुद्दों पर प्रकाश डाला है। अपनी दो रचनाओं ष्शकबाष् और ष्दखेज के पांवष् में भारती जी सामुदायिक चिंताओं पर प्रकाश डालती हैंय अगर ये गुंडे चल जाएं तो मुसाफिर का रास्ता पता चल जाएगा

संदभ

1. ट्रेडअवे, डॉ. (2007) डिजिटल क्राफ्टिंग और डिजिटल क्राफ्टिंग। डिजाइन जर्नल. 10. 10. 2752/146069207789272668.
2. सेदिघी, ज़ोहा। (2019) ग्राफिक उपन्यास संवेदनशील प्राणियों में वर्णनात्मक तकनीकों के उदाहरण।
3. लुटोस्टांस्की, बार्टोज (2018) समसामयिक उपन्यास में आख्यान – कुछ पुनर्संकल्पनाएँ। ज्मोजनंसपं. 1. 2018. 10.5604/01.3001.0013.5153.
4. आर्सेथ, एस्पेन, साइपरटेकस्ट स्पोज़्रज़ेनिया और साहित्य एर्गोडिक्ज़न, ब्यडगोस्ज़कज़रू कोरपोराक्जा हा!आर्ट 2014।
5. अब्राम्स, जे.जे., और डौग डोर्स्ट, एस., एनपी.रू मुल्होलैंड बुक्स 2013. एनालाइजिंग डिजिटल फिक्शन, एड ए. बेल, ए. एन्सलिन, एच.सी. रुस्तद, न्यूयॉर्क और लंदनरू रूटलेज, 2014।
6. एन्स्लिन, एस्ट्रिड, कैनोनाइजिंग हाइपरटेक्स्ट, लंदन और न्यूयॉर्करू कॉन्टिनम 2007, गिबन्स, एलिसन, मल्टीमॉडैलिटी, कॉग्निशन और एक्सपेरिमेंटल लिटरेचर, लंदन और न्यूयॉर्करू रूटलेज 2012।
7. डी फिना, अन्ना, और एलेक्जेंड्रा जॉर्जकोपोलू, नैरेटिव का विश्लेषण। प्रवचन और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य, कैम्ब्रिजरू कैम्ब्रिज यूपी 2012।

8. फ्लुडर्निक, मोनिका, टुवर्ड्स ए ष्नचुरलष् नैरेटोलॉजी, लंदनरू रूटलेज 1996। गिबन्स, एलिसन, ष्रीडिंग एस. अक्रॉस मीडियारू ट्रांसमीडिया स्टोरीवर्ल्ड्स, मल्टीमॉडल फिक्शन, एंड रियल रीडर्सष्, नैरेटिव 2017, वॉल्यूम। 25, नहीं. 3, पृ. 321–341.

9. हलेट, वोल्फगैंग, ष्द राइज़ ऑफ़ द मल्टीमॉडल नॉवेलरू जेनेरिक चेंज एंड इट्स नैराटोलॉजिकल इंप्लीकेशंसष्, इनरू स्टोरीवर्ल्ड्स अक्रॉस मीडिया, एड। एम.–एल. रयान और जे.–एन. थॉन, लिंकन और न्यूयॉर्करू नेब्रास्का विश्वविद्यालय प्रेस 2014, पीपी. 151–172।

10. हैंडबुक ऑफ इंटरमीडियलिटी, संस्करण जी. रिप्पल, बर्लिन, बोस्टनरू डी ग्रुइटर 2015। नैरेटिव अक्रॉस मीडिया, एड। एम.–एल. रयान, लिंकन और लंदनरू नेब्रास्का विश्वविद्यालय प्रेस 2004।

11. हार्डकवर फिक्शन, बेस्टसेलर सूची, द न्यूयॉर्क टाइम्स, 8 सितंबर 2013, अगस्त 2018 को एक्सेस किया गया,।

12. हरमन, डेविड, ष्परिचयष्, इनरू द कैम्ब्रिज कम्पेनियन टू नैरेटिव, संस्करण। डी. हरमन, कैम्ब्रिजरू कैम्ब्रिज यूपी 2007।

13. हरमन, डेविड, बेसिक एलिमेंट्स ऑफ नैरेटिव, चिचेस्टररू विली–ब्लैकवेल, 2009। हरमन, डेविड, स्टोरी लॉजिकरू प्रॉब्लम्स एंड पॉसिबिलिटीज ऑफ नैरेटिव, लिंकनरू यूनिवर्सिटी। नेब्रास्का प्रेस, 2002 का।

14. हुह्न, पीटर, इवेंट एंड इवेंटफुलनेसष्, इनरू द लिविंग हैंडबुक ऑफ नैरैटोलॉजो, एड। पी. हुह्न एट अल., हैम्बर्गरू हैम्बर्ग विश्वविद्यालय। मई 2018 को एक्सेस किया गया,।

15. मार्गोलिन, उरी, ष्द कॉन्स्टिट्यूशन ऑफ स्टारी वर्ल्ड्सरू फिक्शनल एंड/ऑर अदर, सेमियोटिका 2000, वॉल्यूम। 131, नहीं. 3–4, पृ. 327–357.

16. मिशेल, काये, ष्द अनफॉरचुनेट्सरू हाइपरटेक्स्ट, लीनियरिटी एंड द एक्ट ऑफ रीडिंगष्, इनरू रीरीडिंग बी.एस. जॉनसन, एड। पी. ट्यू और जी. व्हाइट, हाउंडमिल्सरू पालग्रेव मैकमिलन 2007, पीपी. 51–64।

17. मित्तल, जेसन। ष्ट्रांसमीडिया टेलीविज़न पर कहानी कहने की रणनीतियाष्, इनरू स्टोरीवर्ल्ड अक्रॉस मीडिया, एड। एम.–एल. रयान और जे.–एन. थॉन, लिंकन और लंदनरू नेब्रास्का विश्वविद्यालय प्रेस, 2014, पीपी. 253–277।

18. नैरेटिव और मल्टीमॉडैलिटी पर नए परिप्रेक्ष्य, संस्करण। आर. पेज, लंदन और न्यूयॉर्करू रूटलेज 2010।

19. नॉर्लेज, जेसिका, षथिंकिंग आउटसाइड ऑफ द बॉक्सरू ए टेक्स्ट वर्ल्ड थ्योरी रिस्पॉन्स टू द इंटरएक्टिविटी ऑफ बी.एस. जॉनसन्स द अनफॉरचुनेट्सष, इनरवेट 2012, वॉल्यूम। 4, पृ. 51–61. पोएटिक्स टुडे, खंड। 24, नहीं. 3 2003, षसिद्धांत और कथा का इतिहासष पर एक अंक।

20. उत्तरशास्त्रीय कथा–विज्ञान। दृष्टिकोण और विश्लेषण, एड. एम. फ्लुडर्निक और जे. अल्बर्ट, कोलंबसरू ओहियो स्टेट यूपी 2010।